बहुल विकलांग बालक (Multiple Handicapped Child)

बहुल विकलांगता-

ऐसे बच्चे जो शारीरिक और मानसिक तौर पर विकलांग होते हैं उनको विशिष्ट बच्चों की श्रेणी में रख रखा जाता है। ऐसे भी कुछ बच्चे होते हैं जिनमें कई तरह की शारीरिक और मानसिक विकलांगता मौजूद होती है इन्हीं बच्चों को बहुल विकलांग कहा जाता है।

बहुल विकलांगता के कुछ उदाहरण इस प्रकार है अंधा, बहरा बालक, मेरुदंड के वक्र से पीड़ित बालक गूंगा, बहरा ,अंधा बालक। मिर्गी और अपंगता का शिकार बालक, आदि।

बहुल विकलांगता के कारण-

1-रोगग्रस्तता

2-माता की बीमारी

3-दुर्घटना से मिली चोट

4-माता द्वारा ली गई दवाइयों का प्रभाव खासतौर से ऐसी दवाइयों का जो थैलिडोमाइट से बनाई जाती है।

5-जर्मन खसरा से पीड़ित माता

बहुल विकलांगता का प्रभाव-

जहां तक बहुल विकलांगता के प्रभाव की बात है तो इसके प्रभाव शैक्षिक, सामाजिक ,शारीरिक ,मानसिक और

संवेगात्मक होते हैं। ऐसे बहुल विकलांग बच्चों को इनके माता-पिता हमेशा बोझ मानते हैं ऐसी बच्चों के प्रति माता-पिता का दर्शन ऐसा होता है कि वे इनको अपने पापों का फल समझते हैं इसी तथ्य को माता पिता अक्सर बच्चों के सामने कहते भी रहते हैं । माता-पिता अपनी कठिनाइयों को और कुंठाओं को बच्चों के साथ दुर्व्यवहार कर के व्यक्ति भी करते हैं।

यह तो साफ नजर आता है कि विकलांगता की वजह से बच्चों का मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाता है कोई गूंगा बहरा या अंधा बच्चा ना तो सूचना कोई इकट्ठा ही कर पाता है और ना ही अपने विचारों को दूसरों से व्यक्त ही कर पाता है इसी कारण बच्चों को हमेशा सूचनाओं के अभाव में अपना जीवन बिताना पड़ता है जिससे इनके ज्ञान के भंडार भी सीमित रह जाता है।

इन सब कठिनाइयों का हमारे सामने परिणाम यह आता है कि शारीरिक मानसिक, शारीरिक और सामाजिक रुप से विकार युक्त बच्चे अविकसित रह जाती हैं और वह शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते हैं। जिसका उनको अधिकार होता है। इसी कारण बच्चे शैक्षिक तौर पर भी या तो शून्य होते हैं या पिछड़ जाते हैं। ऐसे बच्चे जो बहुल विकलांग हैं अर्थात दो या दो से अधिक इंद्रियों की विकलांगता रखते हैं। जैसे अंधापन गूंगा पन, गूंगा पन बहरापन ऐसे बच्चे सबसे ज्यादा शैक्षिक समस्या का शिकार हो जाते हैं।

बहुल विकलांग बालकों की शिक्षा-

ऐसे बच्चों को शिक्षा व्यवस्था करते समय निम्न बातों का खासतौर पर ध्यान देना आवश्यक होता है।

1-अच्छा होगा अगर ऐसे बच्चों के लिए कक्षा के कमरे अलग रखे जाएं।

2-ऐसी शारीरिक न्यूनता वाले बच्चे साधारण बुद्धि के होते इसलिए इन बच्चों को अपना पूर्ण मानसिक विकास करने के लिए शिक्षा द्वारा अवसर दिया जा सकता है।

3-अपंगता या बहुल विकलांगता को ध्यान में रखकर ही हमको इन बच्चों की व्यवसाय से संबंधित शिक्षा का प्रबंध करना चाहिए।

4-बच्चों में शिक्षा की सहायता से ऐसी भावना पैदा करनी चाहिए जिससे वे अपनी कम कर सके और उपयुक्त से उपयुक्त व्यवहार का विकास कर सकें।

ऐसे बच्चों को शिक्षित और व्यवस्थित करने के लिए हमें विशेष प्रयास करने चाहिए जो इस प्रकार हैं-

1-शैक्षिक सुविधाएं

2-मुख्यधारा में लाना

3-पृथीकीकरण

4-शिक्षण

5-शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन